Visit **Dwarkadheeshvastu.com** For

FREE **Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos Educational Books, Educational Videos, Wallpapers**

****

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

dkyh pkyh lk

¼ fgUnh ½

श्री काली चालीसा

जय काली कलिमल हरण, महिमा अगम अपार।
महिष मर्दिनी कालिका, देहु अभय अपार॥

हे माता! आप संसार के पाप और विकार हरने वाली हैं। आपकी महिमा अपरम्पार है। आपने महिषासुर का वध करके संसार को अपार निर्भयता का वरदान प्रदान किया।

अरि मद मान मिटावन हारी।
मुण्डमाल गल सोहत प्यारी॥

हे काली माता! आप शत्रुओं का अहंकार नष्ट करने वाली हैं। आपके गले में मुण्डमाला शोभायमान है।

अष्टभुजी सुखदायक माता।
दुष्टदलन जग में विख्याता॥

आप आठ भुजाओं से युक्त और सुख प्रदान करने वाली हैं। दुष्टों के संहारक के रूप में आप जगत विख्यात हैं।

भाल विशाल मुकुट छवि छाजै।
कर में शीश शत्रु का साजै॥

आपके विशाल मस्तक के मुकुट की शोभा अवर्णनीय है। आपके हाथ में शत्रु का कटा शीश शोभा पा रहा है।

दूजे हाथ लिए मधु प्याला।
हाथ तीसरे सोहत भाला॥

आपने अपने दूसरे हाथ में मधु (मदिरा) का प्याला लिया हुआ है तथा तीसरे हाथ में भाला शोभायमान है।

चौथे खप्पर खड्ग कर पांचे।
छठे त्रिशूल शत्रु बल जांचे॥

चौथे में खप्पर व पांचवें में खड्ग धारण किए आप छठे हाथ के त्रिशूल से शत्रुओं का बल जांचा करती हैं।

सप्तम कर दमकत असि प्यारी ।
शोभा अद्भुत मात तुम्हारी ॥

हे मां! आपके सातवें हाथ में कृपाण है, जिसकी शोभा से आपका तेज अद्भुत दृष्टिगोचर होता है।

अष्टम कर भक्तन वर दाता।
जग मनहरण रूप ये माता॥

आठवें हाथ से आप भक्तों को वरदान प्रदान करती हैं। आपका यह रूप जगत के लिए अत्यन्त मनोहारी है।

भक्तन में अनुरक्त भवानी।
निशदिन रटें ऋषी-मुनि ज्ञानी॥

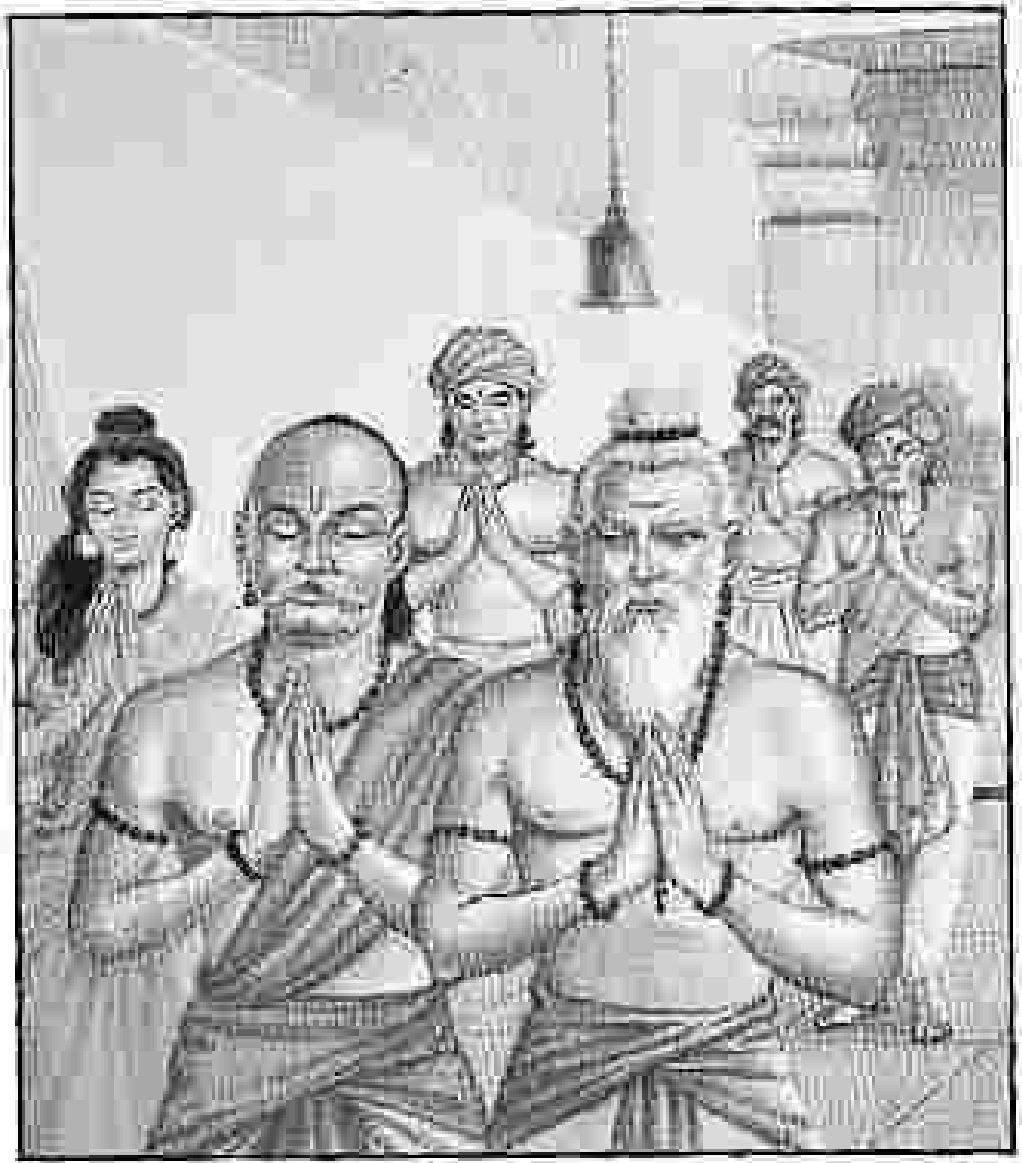

हे माता! भक्तों से आप बहुत स्नेह रखती हैं। ऋषि, मुनि और विद्वान सभी आपकी स्तुति में रत रहते हैं।

महाशक्ति अति प्रबल पुनीता।
तू ही काली तू ही सीता॥

काली एवं सीता (कृष्ण और राम की शक्ति) के रूप में आप महा-शक्तिशाली, प्रचण्ड और पवित्र हैं।

पतित तारिणी हे जग पालक।
कल्याणी पापी कुल घालक॥

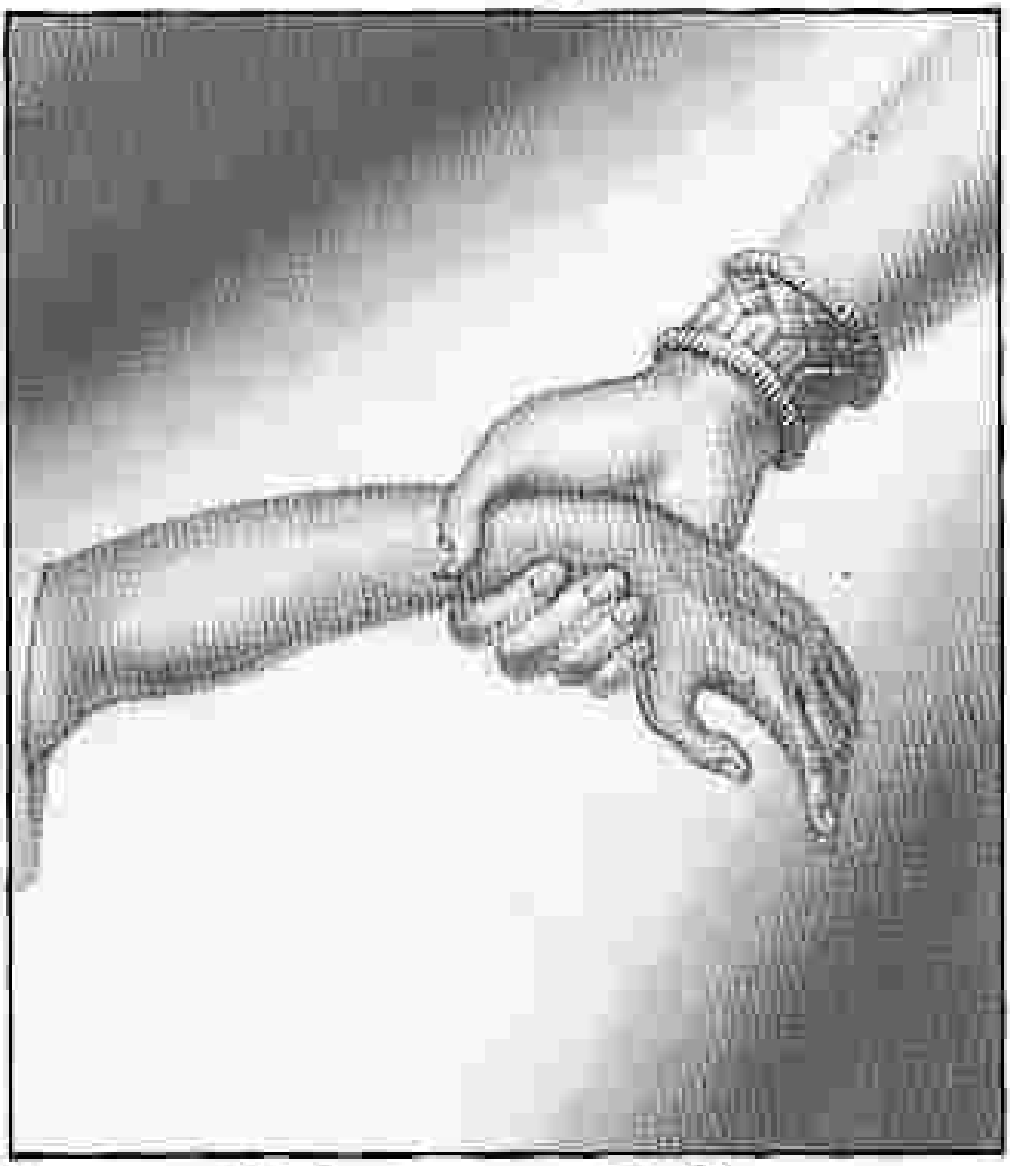

हे जगपालिके! आप पतितों का उद्धार करने वाली और शरण में आए पापियों के कुल का कल्याण करने वाली हैं।

शेष सुरेश न पावत पारा।
गौरी रूप धर्‌यो इक बारा॥

आपने एक बार पार्वती का अद्‌भुत रूप धारण किया जिसका वर्णन शेषनाग, इन्द्रादि भी नहीं कर पाए।

तुम समान दाता नहिं दूजा।
विधिवत् करें भक्तजन पूजा।।

आपके समान वर प्रदान करने वाला कोई नहीं। भक्तों की विधिवत् स्तुति से आप शीघ्र प्रसन्न होती हैं।

रूप भयंकर जब तुम धारा।
दुष्टदलन कीन्हेहु संहारा॥

जब-जब आपने प्रचण्ड रूप धारण किया है, तब-तब आपने पापियों का सेना सहित संहार किया है।

नाम अनेकन मात तुम्हारे।
भक्तजनों के संकट टारे॥

हे माता! आप अनेक नामों से जानी जाती हैं, आपके वे सभी नाम भक्तजन के संकट दूर कर देते हैं।

कलि के कष्ट कलेशन हरनी।
भव भय मोचन मंगल करनी॥

आप कलियुग के समस्त कष्ट और संतापों को दूर कर भय हरने तथा मंगल करने वाली दयामयी माता हैं।

महिमा अगम वेद यश गावैं।
नारद शारद पार न पावैं॥

आपकी महिमा और यश वेदों ने भी गाया है। नारद-शारद, ज्ञानी-ध्यानी भी आपका पार नहीं पा सके हैं।

भू पर भार बढ्यौ जब भारी।
तब तब तुम प्रकटीं महतारी॥

जब-जब धरती पर पापों का बोझ बढ़ा, तब-तब आपने प्रकट होकर मानवता का उद्धार किया।

आदि अनादि अभय वरदाता।
विश्वविदित भव संकट त्राता।।

हे माता! आप संकट हरने वाली मां के रूप में जगविख्यात हैं। आपने ब्रह्माण्ड को अभय वर दिया है।

कुसमय नाम तुम्हारौ लीन्हा।
उसको सदा अभय वर दीन्हा॥

विपत्ति काल में जिसने भी आपका स्मरण किया, आपने सदैव सहायता कर, उसे अभय का वर दिया।

ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा।
काल रूप लखि तुमरो भेषा॥

आपके अति भयंकर काल रूप का ध्यान धरते हुए सरस्वती, शेषनाग और इंद्रादि भी आराधनारत हो उठते हैं।

कलुआ भैरों संग तुम्हारे।
अरि हित रूप भयानक धारे॥

दुष्टों तथा शत्रुओं के नाश के लिए भयानक रूप धारण करने वाले काल भैरव सदैव आपके साथ रहते हैं।

सेवक लांगुर रहत अगारी।
चौंसठ जोगन आज्ञाकारी॥

हे माता! चौंसठ जोगन सेविकाएं आपकी आज्ञाकारिणी हैं और लांगुर सेवक आपकी सेवा को तत्पर हैं।

त्रेता में रघुवर हित आई।
दशकंधर की सैन नसाई॥

त्रेतायुग में आप भगवान श्रीराम की सहायता के लिए प्रकट हुईं। आपने ही रावण की सेना का नाश किया।

खेला रण का खेल निराला।
भरा मांस-मज्जा से प्याला॥

आपने शत्रुओं का नाश करने के लिए
युद्ध रचा और दुष्टों के मांस-मज्जा से
आपने अपने खप्पर को भर लिया।

रौद्र रूप लखि दानव भागे ।
कियौ गवन भवन निज त्यागे ॥

आपका प्रचण्ड-विकराल और रौद्र रूप देख असुर भयभीत होकर अपने भवन छोड़ कर भाग निकले ।

तब ऐसौ तामस चढ़ आयो ।
स्वजन विजन को भेद भुलायो ॥

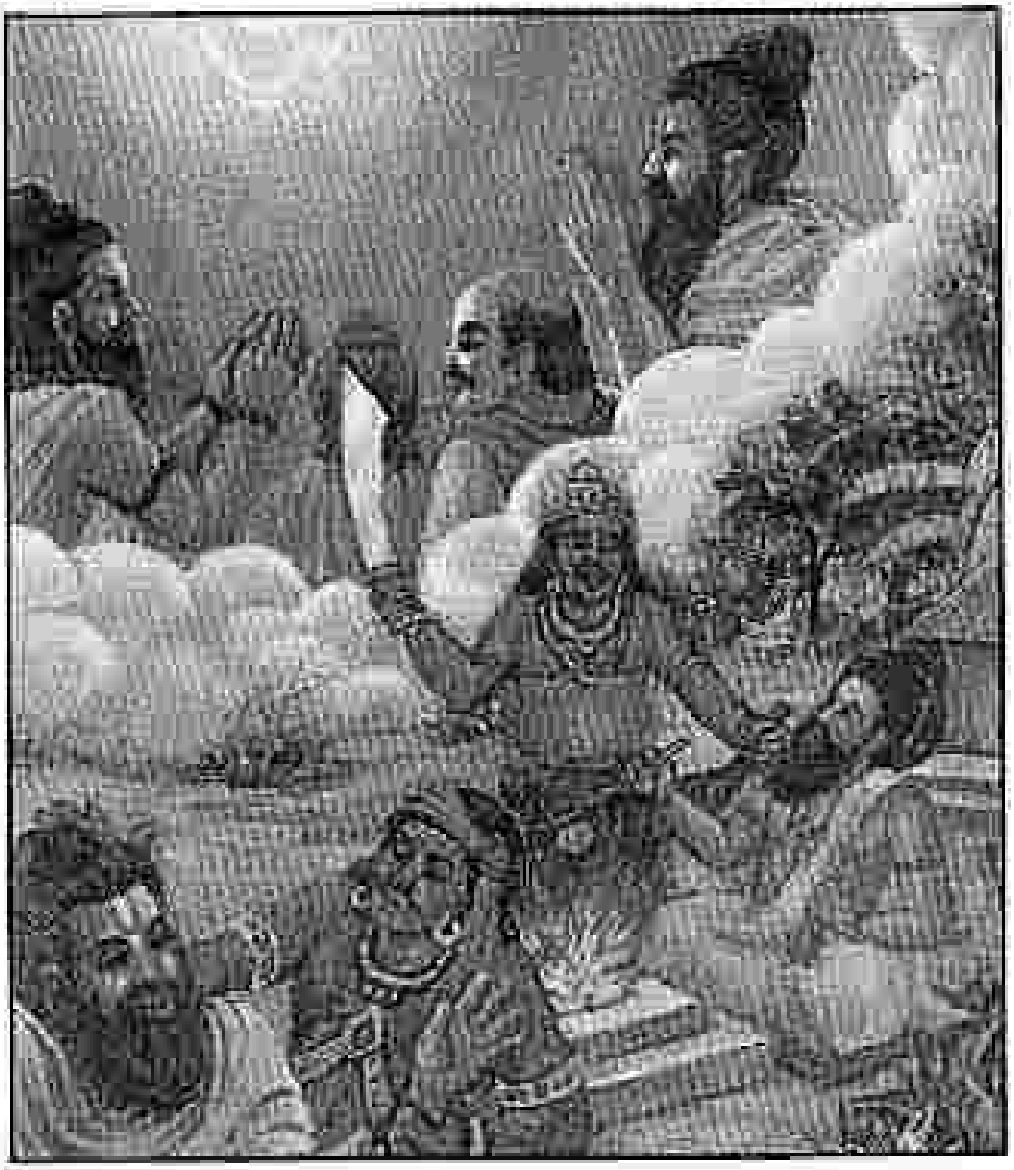

जब-जब पाप का अंधकार बढ़ता है, तब-तब आप अपने-पराए का भेद मिटा कर साक्षात् प्रकट होती हैं।

ये बालक लखि शंकर आए।
राह रोक चरनन में धाए॥

आपके प्रचण्ड रूप से आकर्षित हो भगवान शंकर भी बालक बन आपके चरणों में नतमस्तक हो गए।

तब मुख जीभ निकर जो आई।
यही रूप प्रचलित है माई॥

शंकर जी को चरणों में देख आश्चर्य से आपकी जिह्वा बाहर निकल आई और यही रूप प्रचलित हो गया।

बाढ़्यो महिषासुर मद भारी।
पीड़ित किए सकल नर-नारी॥

जब महिषासुर का अहंकार और आतंक बढ़ा तो समस्त नर-नारी त्राहि माम्-त्राहि माम् करने लगे।

करुण पुकार सुनी भक्तन की।
पीर मिटावन हित जन-जन की॥

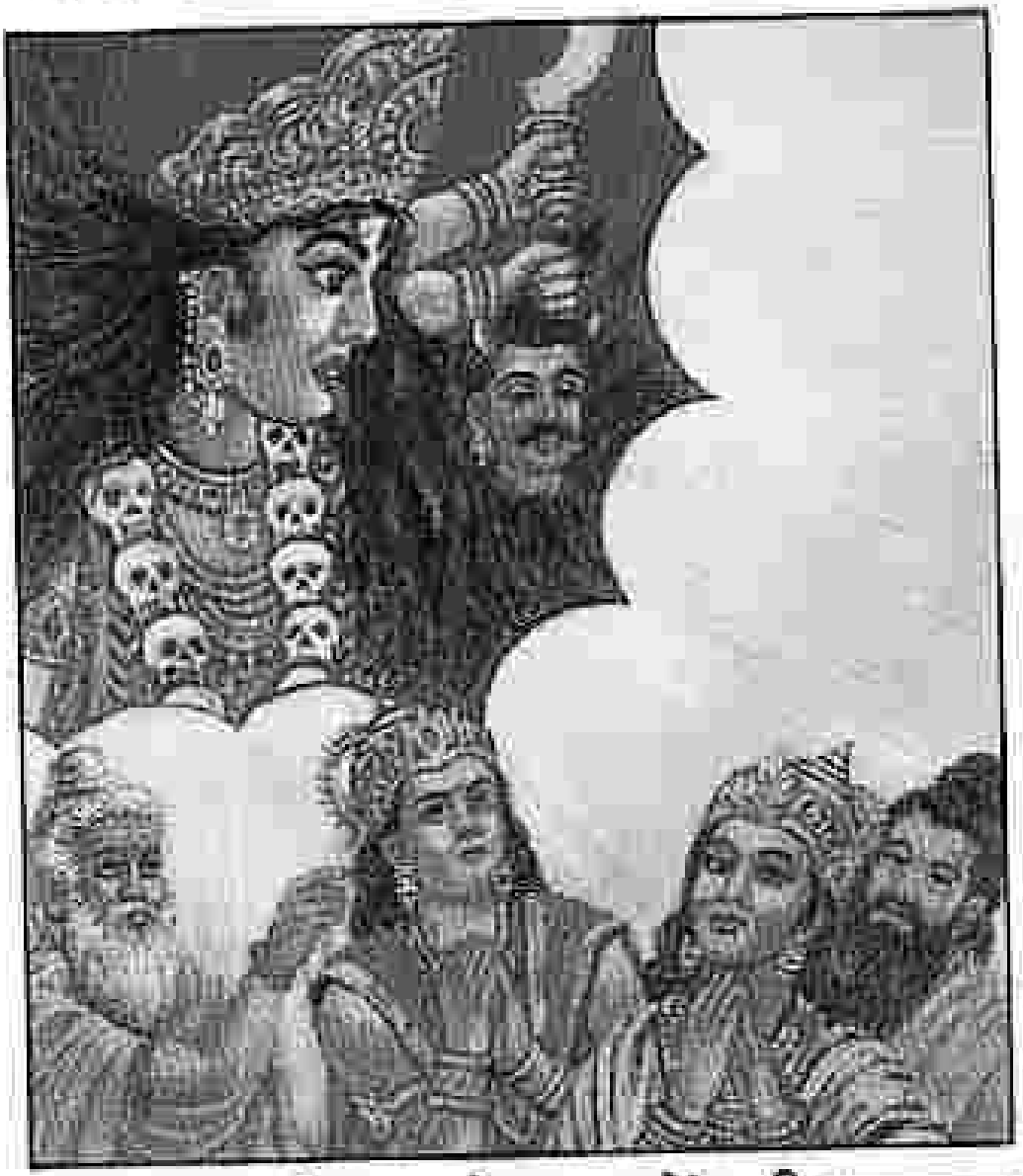

जब आपने अपने भक्तों की करुण पुकार सुनी तो पीड़ित मानवता के उद्धार के लिए तुरंत उद्यत हो उठीं।

तब प्रगटी निज सैन समेता।
नाम पड़ा मां महिष विजेता॥

हे माता! आप अपनी सेना सहित प्रकट हुईं और महिषासुर का संहार कर महिष-विजेता कहलाईं।

शुंभ निशुंभ हने छन माहीं।
तुम सम जग दूसर कोउ नाहीं॥

अत्याचारी शुंभ-निशुंभ दैत्यों को आपने पलक झपकते ही समाप्त कर दिया। आप संसार में अद्वितीय हैं।

मान मथनहारी खल दल के ।
सदा सहायक भक्त विकल के ॥

हे मां! आप जहां शत्रुओं के अहंकार को तोड़ने वाली हैं, वहीं कष्टों मे घिरे भक्तजनों की सहायिका भी हैं।

दीन विहीन करैं नित सेवा।
पावैं मनवांछित फल मेवा॥

जो दीन-दुखी नित आपकी सेवा में लीन रहते हैं, वे निश्चित ही आपकी दया और वरदान के पात्र बनते हैं।

संकट में जो सुमिरन करहीं।
उनके कष्ट मातु तुम हरहीं॥

हे माता! जो संकटकाल में आपका स्मरण भक्तिभाव से करता है, आप निश्चित ही उसका कष्ट हरती हैं।

प्रेम सहित जो कीरति गावैं।
भव बन्धन सों मुक्ती पावैं॥

हे मां! जो भी प्रेम और भक्तिभाव से आपका यशोगान करता है, आप उसे भव-बंधन से मुक्ति प्रदान करती हैं।

काली चालीसा जो पढ़हीं।
स्वर्गलोक बिनु बंधन चढ़हीं॥

जो भी नियमपूर्वक भक्ति-भाव से
काली चालीसा का पाठ करता है,
उसकी सद्गति अवश्य होती है।

दया दृष्टि हेरौ जगदम्बा।
केहि कारण मां कियौ विलम्बा॥

हे जगतजननी! अविलम्ब कृपा दृष्टि डालकर मेरा उद्धार करें। किस कारण से आप इतना बिलम्ब कर रही हैं?

करहु मातु भक्तन रखवाली।
जयति जयति काली कंकाली॥

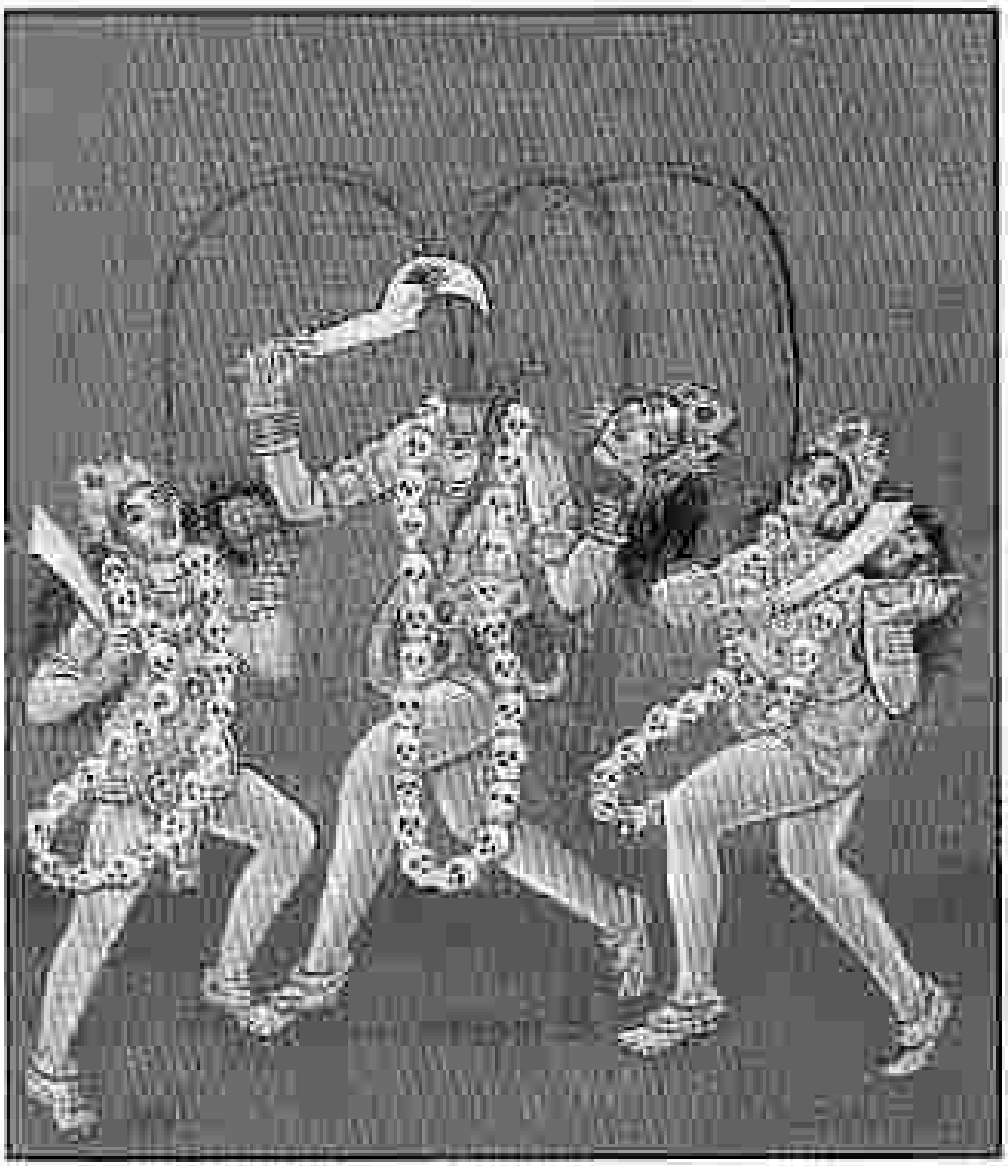

सदैव भक्तों के साथ रहने वाली, भक्तरक्षक हे माता! हम अन्तर्हृदय से आपकी जय-जयकार करते हैं।

सेवक दीन अनाथ अनारी।
भक्तिभाव युति शरण तुम्हारी॥

यह मूर्ख और दीन-हीन सेवक भक्तिभाव से आपकी शरण में है। हे माता! इसकी त्रुटियों को क्षमा करना।

॥ दोहा ॥

प्रेम सहित जो करे, काली चालीसा पाठ।
तिनकी पूरन कामना, होय सकल जग ठाठ॥

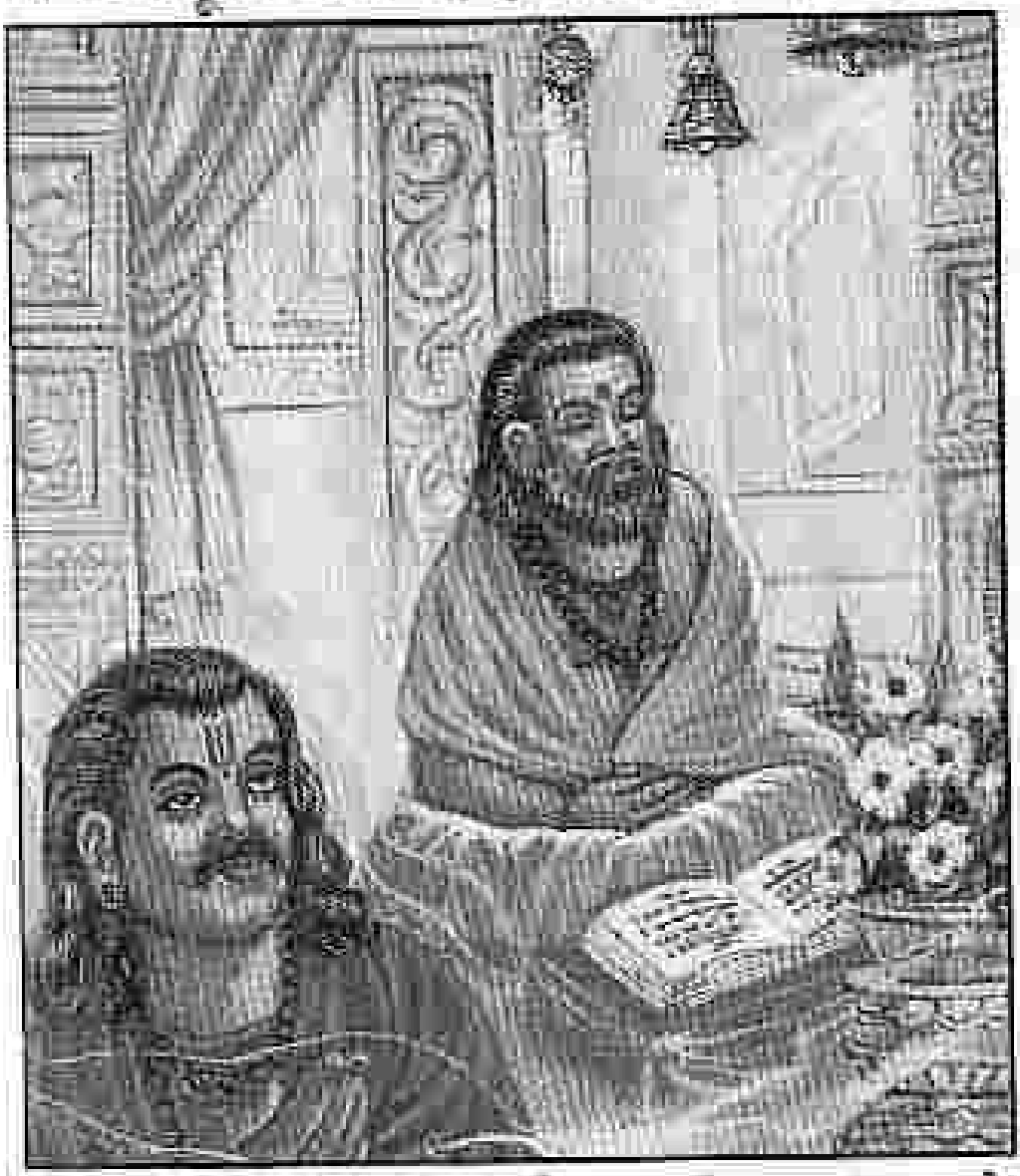

जो व्यक्ति प्रेम और भक्तिभाव से
काली चालीसा का पाठ करता है,
उसकी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

कालिकास्तवः

रचयति सहसा यच्चित्रमेतत्प्रपंचं
प्रशमयति च तद्वत्केनचित्कौतुकेन।
अविदितमपरैस्तच्चण्डमुण्डादिनाना
दनुजदलनदक्षं शर्वसर्वस्वमव्यात्॥

प्रचण्डचण्डमुण्डयोर्महाबलैकखण्डिनी
ह्यनेकरुण्डमुण्डयुग्मणे बलैकदायिनी॥
क्वचित्त्वशक्तिकारिणी रमाविलासदायिनी
मुदेऽस्तु कालिका सदा समस्तपापहारिणी॥
पुरारिनन्दुहारिणी दुरितसंघसंहारिणी
भजन्मतिविवर्धिनी प्रबलदानवोन्मादनी॥
तुषारगिरिनन्दिनी मुनिहृदन्तरालम्बिनी
कुमारमुखचुम्बिनी हरनितम्बिनी पातु वः॥
सत्त्वादिस्थैर्यगणितगुणैर्हन्त विश्वं प्रसूय
व्यक्तं धत्ते प्रहसनकरी या कुमारीति संज्ञाम्।
मोहध्वान्तप्रसरविरतिर्विश्वमूर्तिः समंता-
दाद्या शक्ति स्फुरतु मम सा दीपवद्देहगेहे॥

श्री काली कवचम्

विनियोग

श्री जगन्मंगलस्यापि कवचस्य ऋषिः शिवः।
छंदोऽनुष्टुब्देवता च कालिका दक्षिणेरिता॥
जगतां मोहने दुष्टविजये भुक्तिमुक्तिषु।
योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः॥

शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा।
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी॥
हूं हूं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुतिद्वयम्।
दक्षिणे कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी॥
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातु कपोलकम्।
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी॥
द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्याखिलप्रदा।
खड्गमुण्डधरा काली सर्वांगमभितोऽवतु।
क्रीं हूं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम॥
ऐं हूं ॐ ऐं स्तन द्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम्।

अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका।
क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं करौ पातु षडक्षरी॥
क्रीं नाभिं मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकेऽवतु।
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठं च कालिका सा दशाक्षरी॥
क्रीं मे गुह्यं सदा पातु कालिकायै नमस्ततः।
सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता॥
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिका हूं हूं पातु कटिद्वयम्।
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहान्ता चोरुयुग्मकम्॥
ओं ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु जानुनी कालिका सदा।
काली ह्रन्नामधेयं च चतुर्वर्ग फलप्रदा॥
क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकावतु।
क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम॥
खड्गमुण्डधरा काली वरदाभय धारिणी।
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वांगमभितोऽवतु॥
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी।
विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता घनत्विषा॥
नीलाघना बलाका च मात्रा मुद्रा मिता च मा।
एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला विभूषणाः॥

रक्षन्तु मां दिग्विदिक्षु ब्राह्मी नारायणी तथा।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमी चापराजिता॥
वाराही नरसिंही च सर्वाश्चायुध भूषणा।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु मां यथा तथा॥
इति कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम।
श्री जगन्मंगलं नाम महाविद्यौघविग्रहम्॥
त्रैलोक्याकर्षकं ब्रह्मन् कवचं मन्मुखोदितम्।
गुरु पूजां विधायाथ विधिवत् प्रपठेत्ततः॥

श्री काली स्तवन

नमामि कृष्णरूपिणीं कृष्णाङ्गयष्टि धारिणीम्।
समग्र तत्वसागर मपारसारगह्वराम्॥

हम कृष्णरूपा भगवती श्री कालीजी को सादर नमस्कार करते हैं, जिनका प्रत्येक अंग कृष्ण वर्ण है। आप समस्त तत्वों की महासागर हैं। भक्तजन को आप सरलता से प्राप्त हैं। आप गह्वरा हैं अर्थात् आपका भेद कोई नहीं पा सकता।

शिवां प्रभां समुज्ज्वलां स्फुरच्छशांक शेखरां।
ललाटरत्नभास्करां जगत्प्रदीप्ति भास्कराम्॥

आप कल्याण स्वरूपा एवं उज्ज्वला हैं। प्रकाशित चन्द्रमा को मस्तक पर धारण करने वाली हैं। आप ही सबके ललाट में प्रकाश भरती हैं। आप ही संसार को प्रकाशित करने वाले भगवान सूर्य के समान हैं।

महेन्द्र कश्यपर्चितां सनत्कुमार संस्तुतां।
सुरासुरेन्द्र वंदितां यथार्थ निर्मलाद्भुतां॥

हे माता! आपको महेन्द्र तथा कश्यप ने बारम्बार

पूजा है। सनत्कुमारों ने आपकी रात-दिन स्तुति की है। देवता और दानव दोनों ही आपके भक्त हैं। आप निर्मल हैं तथा यथार्थ में अद्भुत हैं।

अतर्क्यरोचिरूर्जितां विकारदोष वर्जितां।
मुमुक्षुभिर्विचिन्तितां विशेषतत्व सूचितां॥

आप तर्क-वितर्क से परे हैं। आप साक्षात् ज्योति हैं। ओज प्रदायक तथा समस्त विकारों से रहित हैं। मोक्ष के अभिलाषी आपका चिन्तन करते हैं। विशेष तत्वज्ञान से ही आपको जाना-पहचाना जा सकता है।

मृतास्थिनिर्मित स्वजां मृगेन्द्र वाहनाग्रजाम्।
सुशुद्ध तत्वतोषणां त्रिवेद पारभूषणाम्॥

आप मृत शरीर की हड्डियों की माला धारण करती हैं। आपका वाहन मृगराज सिंह है। आप सर्वप्रथम जन्मीं। विशुद्ध तत्वज्ञानी आपको शीघ्र ही प्रसन्न कर लेते हैं। आप वेदों में श्रेष्ठ और सदा सुशोभित हैं।

भुजंगहार हारिणीं कपाल खड्गधारिणीम्।
सुधार्मि कोप कारणीं सुरेन्द्र वैरघातिनीम्॥

आप सर्पाहार धारण करने वाली, हाथ में कपाल और खड्ग ग्रहण किए हैं। आप भक्तों का उपकार करने वाली हैं। आप सदा शुभंकरा हैं। जब आप कपाल माला धारण करती हैं तो वीरांगना और शत्रुओं का नाश करने वाली दृष्टिगोचर होती हैं।

कुठारपाशचापिनीं कृतान्त काममोदिनीं।
शुभां कपाल मालिनीं सुवर्णकन्यशाखिनीं॥

हे जगद्धात्री! आप कुठार, पाश तथा धनुष धारण किए हैं। आप मृत्यु का निवारण करने वाली तथा सदा कल्याणी हैं। आप कपाल माला धारण करने वाली, महावीरांगना तथा परम सुन्दरी हैं।

श्मशान भूमि वासिनीं द्विजेन्द्र मौलिभाविनीम्।
तमोऽन्धकार यामिनीं शिवस्वभाव कामिनीम्॥

आप श्मशान भूमि में निवास करती हैं। श्रेष्ठ विद्वानों एवं ब्राह्मणों द्वारा चिन्तनीया हैं। आप घोर अन्धकार के समान रात्रिरूपिणी हैं। आप शिवस्वरूप कल्याणकारिणी देवी हैं।

सहस्र सूर्य्यराजिकां धनञ्जयोग्रकारिकाम्।
सुशुद्ध काल कंदलां सुभृंगवृन्दमन्जुलाम्॥
आप सहस्रों सूर्यों के समान महाप्रकाश स्वरूपा हैं। धनंजय को साहस प्रदान करने वाली, विशुद्ध काल की मूलभूता हैं। आप चमकीले भ्रमरों के समान मनोहर वर्ण वाली हैं।

प्रजायिनीं प्रजावतीं नमामि मातरं सतीं।
स्वकर्म कारिणे गतिं हरि प्रियाञ्च पार्वतीम्॥
हे माता काली! आप प्रजा की उत्पत्ति तथा पालन करने वाली हैं। आप अपने पराक्रमी कर्मों के कारण गति-स्वरूपा हैं। आप भगवान शंकर की पत्नी माता पार्वती के समान सर्वगुण सम्पन्ना हैं। ऐसी सती माता को हम बारम्बार नमस्कार करते हैं।

अनंतशक्तिकान्तिदां यशोऽर्थभुक्तिमुक्तिदां।
पुनः पुनर्जगद्धितां नमाम्यहं सुरार्चिताम्॥
आप अनन्त शक्ति, क्रांति, यशोधन, विजय, भोग तथा मोक्ष प्रदायिका एवं सदा कल्याणकारी हैं। इसी कारण आप देवताओं द्वारा पूज्य हैं।

जयेश्वरि त्रिलोचने प्रसीद देवि पाहि माम्।
जयन्ति ते स्तुवन्ति ये शुभं लभन्त्यमोक्षतः॥
हे परमेश्वरी! आपकी जय हो। हे त्रिलोचने! दया करो, रक्षा करो। जो व्यक्ति आपका गुणगान करते हैं, वे निश्चय ही कल्याण प्राप्त करते हैं। दयास्वरूपा, आप सहज ही उन्हें मोक्ष प्रदान कर देती हैं।

सदैव ते हतद्विषः परं भवन्ति सज्जुषः।
जराः परे शिवेधुना प्रसाधि मां करोमि किम्॥
हे माता! भक्तों के शत्रुओं का आप सदैव नाश करती हैं। आपके भक्त संसार में यश प्राप्त करते हैं। हे दयामयी! हमें भी उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त करें। हे माता! आपके बिना हम कुछ नहीं कर सकते।

अतीव मोहितात्मनो वृथा विचेष्टि तस्य मे।
कुरु प्रसादितं मनो यथास्मि जन्म भंजनः॥
हम विराट मोह-माया में डूबे हैं। हमारे प्रयत्न असफल हो रहे हैं। अगर आप हम पर प्रसन्न हुईं तो हम जन्म के बंधन से मुक्ति पा लेंगे।

तथा भवन्तु तारका यथैव घोषितालकाः ।
इमां स्तुतिं ममेरितां पठन्ति कालिसाधकः ॥
न ते पुनः सदुस्तरे पतन्ति मोह गह्वरे ॥

हे विश्वजननी ! आपके भक्त सदा वीर, धीर, विजयी और सुखी हों। भगवती काली के जो भी उपासक इस स्तुति का पठन-पाठन और उपासना करेंगे, वे भूलकर भी कभी मोह-माया के गड्ढे में नहीं गिरेंगे।

संकटमोचन काली अष्टक

चिन्तित देख इन्द्र की माता,
जगदम्बे न तथ्य विचारो।
क्रोधित खप्पर खड्ग सम्भारो॥
भ्रू से प्रकट भई श्री काली,
कूद पड़ी निर्भय रण में वे।
चंड मुण्ड के त्रिशूल मारो॥
को नहिं जानत है जग में,
मां संकटमोचन नाम तिहारो॥
बड़ी वीरता से मां तुमने,
रण में चण्ड व मुण्ड पछारो॥
शुम्भ निशुम्भ बड़े अभिमानी,
तिनके शूल वक्ष में मारो॥
रक्तबीज का काटि लियो सिर,
वरदानी कर गयो किनारो।
को नहीं जानत है जग में,

बालार्क मण्डलं भासां
चतुर्बाहा त्रिलोचनाम्।
पाशांकुश शरांश्चापान्
धारयन्तीम् शिवां भजे॥

मां संकटमोचन नाम तिहारो॥
भूमि शत्रु के रक्त रंग गई,
जब खप्पर व खड्ग निकारो।
महिषासुर काटे गयो युद्ध में,
बड़ा घमण्डी शत्रु विचारो॥
कौन सो संकट मोहि गरीब को,
जो तुम पै मां जात न टारो॥
को नहीं जानत है जग में,
मां संकटमोचन नाम तिहारो॥
देवन के दुख दूर हो गए,
तब झट पट बाग स्वर्ग को झारो।
बरसे इतने फूल कि माता,
छिपीं क्रोध कर गयो किनारो॥
ब्रह्मा विष्णु महेश मगन भए,
छुए चरण यमराज विचारो।
को नहिं जानत है जग में,
मां संकटमोचन नाम तिहारो॥

मां काली की आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली,
जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गायें भारती,
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥
तेरे भक्त जनों पे माता,
भीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो मां,
करके सिंह सवारी॥
सौ सौ सिंहों से बलशाली,
है दस भुजाओं वाली।
दुखियों के दुखड़े निवारती,
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥
मां बेटे का है इस जग में,
बड़ा ही निर्मल नाता।

पूत कपूत सुने हैं पर,
माता ना सुनी कुमाता ॥
सब पे करुणा दरसाने वाली,
अमृत बरसाने वाली।
दुखियों के दुखड़े निवारती,
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती ॥
नहीं मांगते धन और दौलत,
न चांदी न सोना।
हम तो मांगें मां तेरे मन में,
इक छोटा सा कोना ॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली,
लाज बचाने वाली।
सतियों के सत को संवारती,
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती ॥

आरती काली मां की

आरती कीजै काली मां की॥
काली मां की आरती कीजै,
स्नेह सुधा सुख सुन्दर लीजै।
जिनके नाम लेत दुःख भाजै,
ऐसी वह माता वसुधा की॥
पाप विनाशिनि कलि मल हारिणि,
दयामयी भवसागर तारिणि।
शस्त्रधारिणी शैल विहारिणि,
बुद्धिराशि निजजन त्राता की॥
निशचर कुल मर्दिनि भगनी,
गौरव गान करें जग प्राणी।
शिव के हृदयासन की रानी,
करें आरती हम सब ताकी॥